दोपहर का

क्र.टेक-४७/३१२/एम.बी.आय/२००२

# सामना

वर्षः १०, अंक २०९, गुरुवार, मुंबई ३१ अक्टूबर २००२ पेज १६

मूल्य २ रुपए

संपादक : बाल ठाकरे

गुरुवार ३१ अक्टूबर २००२

## वास्तु पालन से जीवन में कम होता है तनाव

दोपहर का सामना

८

सामना संवाददाता / मुंबई



मुंबई की महत्वपूर्ण इमारतों मे केवल आयकर भवन का निर्माण ही वास्तुशास्त्र के मुताबिक शत प्रतिशत सही है । यह कहना है प्रसिद्ध वास्तुशास्त्री संजय माहेश्वरी का।

वास्तु विशेषज्ञ संजय माहेश्वरी के मुताबिक मुंबई में भी वास्तु शास्त्र की उपयोगिता का लाभ लिया जा सकता है। उनके अनुसार मुंबई मे जैसी भी छत हो, उसमें किस प्रकार सोएं, बैठे, पकाएं पूजा करें, पानी रखें, यह सब तो वास्तु के अनुरुप किया जा सकता है। श्री माहेश्वरी का कहना है कि वास्तु पालन करने से जीवन में तनाव भी कम हो जाते है।

**विविधा**

# पूरी पृथ्वी पर सोया है वास्तु पुरूष

समय के बदलते दौर में एक बार फिर से वास्तु का महत्व बढा है। मूलतः वास्तु संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है वास करनेका स्थान। ऋग्वेद, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, नारद संहिता एवं पुराणओं में वास्तु के सिध्दांतों का उल्लेख मिलता है। महाराजा भोज ने ग्यारहवी शताब्दी में 'समरांगण सुत्रधार' लिखा जो वास्तुशास्त्र का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। मेवाड के महाराज कुंभा के राज्यकाल में भी वास्तु साहित्य लिखा गया। इस दौर के एक शतक पहले गुजराती भाषामें 'राज वल्लभ' नामक ग्रंथ वास्तु शास्त्र पर लिखा जा चुका था।

आज जिस तरह से तमाम शहर सीमेंट के जंगल बनते जा रहे हैं, वहां वास्तुशास्त्र की अपनी भुमिका को लोग धीरे-धीरे मानते जा रहे है। क्यों कि वास्तुशास्त्र कोई अंधविश्वास नहीं है, न ही यह कोई जादू टोना है।

## रहन सहन

वास्तु शास्त्र से जुडे कुछ सवालों को समझने लिए वास्तु विशेषज्ञ संजय माहेश्वरी से मुलाकात की। वे वास्तु के साथ-साथ स्थापत्य विकास में भी दखल रखते हैं। उन्होंने भवन के ढांचे और मानवीय जीवन पर पडने वाले वास्तु के प्रभाव पर गहरा अध्ययन किया है। वे वास्तु शिल्प के व्यावसायिक सलाहकार हैं। यहां प्रस्तुत है उनसे हुई बातचित के कुछ अंश:

**मुंबई में, जहां अधिकांश लोग जैसे तैसे एक छत की जुगाड कर पाते हैं, उनके जीवन में वास्तु शास्त्र की क्या उपयोगिता रह जाती है?**

मुंबई का महानगरीय जीवन हमारे देश के अन्य महानगरों से सर्वोपरि भी है और विकट भी। यह सही बात है कि यहां साधारण आदमी के लिए 'छत की जुगाड' महत्वपूर्ण उपलब्धि है। पर शास्त्र की उपयोगिता का लाभ तो कमोबेश सभी जगहों पर लिया जा सकता है। सवाल यह है कि उसके लिए ललक होना चाहिए। प्रत्येक शास्त्र, प्रत्येक दर्शन या गुरु आपको ज्ञान के साथ-साथ अनुशासन में भी रहना सिखाते है। जैसी भी छत मिली हो उसमें किस प्रकार सोंए, बैठे, पकाएं, पूजा करें, पानी रखें, यह सब तो वास्तु के अनुरूप किया ही जा सकता है। वास्तु पालन करने से जीवन में तनाव भी कम हो जाते हैं।

**क्या आपको नहीं लगता कि वास्तु शास्त्र का पालन हर किसी के बश की बात नहीं हैं?**

मैं आपसे सहमत नहीं हूं। क्योंकि अपने जीवन में निजी नियमों का पालन करता है या नही, यह उसका व्यक्तिगत प्रसंग है। वास्तु भी व्यक्तिगत पसंद का विषय है। यह कोई शासकीय नियम नहीं है। वांछित स्थान ढूंढने में कई प्रयास विफल भी होते हैं, मगर इसका मतलब यह तो नहीं कि वह आपके बस की बात नही है। हां, इसके लिए संयम जरुरी है और उससे भी ज्यादा जरुरी है कि आप क्या वास्तु शास्त्र को पसंद करते है।

**वास्तु के हिसाब से एक अच्छा घर किस तरह का होना चाहिए?**

जब अच्छे घर की बात आती है तो उसका तात्पर्य उस घरसे है जिसके निर्माण में न किसी प्रकार का समझोता है और न ही कोई किंतु परंतु। ऐसा घर जो वास्तु सिध्दांतों से परिपूर्ण है, एक आदर्श घर कहा जा सकता है। उसके लिए भूखंड उत्तरी पूर्वी मार्ग के कोने में स्थित होना चाहिए। या जिसके चारों और मार्ग हो या फिर पूर्व या उत्तर दिशा के मार्ग पर स्थित हो, मगर मार्ग के आखिर में न हो। भूखंड चौरस या वर्गाकार हो, मगर लंबाई चौडाई से दुगनी से कम हो। फिर वास्तु सलाहकार के परामर्श से मकान नक्शा तैयार करना चाहिए। वास्तु शास्त्री निर्धारित करेंगे कि शयन कक्ष कहां हो और उसका दरवाजा किस तरफ खुलना चाहिए। अतिथि कक्ष कहां हो, रसोई कहां हो आदि। इस तरह का मकान तुलनात्मक दृष्टी से ज्यादा खुला होगा। मकान का दक्षिणी व पश्चिमी एलिवेशन ऊंचाई पर होग। यह ऊंचाई पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति तथा विद्युत प्रवाह को अबाध गति से बहने देने की प्रक्रिया है।

**वास्तु शास्त्र का प्रचलन पिछले दशक से जिस तरह बढा है, क्या उससे यह नहीं लगता कि एक खास वर्ग के लिए इसने फैशन का रुप धारण कर लिया है?**

ऐसी कोई बात नही, यह फैशन नहीं, चेतना बोध है। वास्तु को फैशन कहना गलत है। यह अवश्य है कि पिछले दशक से वास्तु के प्रशंसकों की संख्या काफी बढी है और लगातार बढ रही है। जिन लोगों ने वास्तु सिध्दांतों को जीवन में अपनाया है, उसका सुखद प्रभाव देखा है तो इसका प्रसार होनेवाला ही। इस घोर भौतिकवादी और अवसरवादी युग में कौन अपना समय बिना कुछ पाए खोना चाहेगा। वास्तु के लिए केवल पैसा ही नहीं खर्चा करना होगा, उसके अनुशासन में रहना भी पडता है।

**वास्तु शास्त्र के सिध्दांत घर बनाने तक ही सीमित है या कारखानों और वाणिज्य इमारतों में भी इसकी उपयोगिता है?**

ऐसा कोई भी स्थान जहां मनुष्य अपने जीवन के मनोवांछित कार्यों की कर्मभूमि बनाना चाहता हो, वहां वास्तु का पालन हो सकता है। चाहे वह उद्योग धंधे हों, फैक्टरी हो, व्यापारिक प्रतिष्ठान हो, कलाकेंद्र हो, अस्पताल हो, होटल या फिर देवालय। ये सभी वास्तु परिधि में आ जाते हैं।

**'वास्तु पुरूष' क्या होता है और दिशाओं का वास्तुशास्त्र में क्या महत्व है?**

'वास्तु पुरुष' मत्स्य पुराण की कथा के अनुसार एक ऐसा पुरुष है जो संपूर्ण पृथ्वी पर सोया हुआ है। उसका सिर ईशान (उत्तर पुर्व) दिशा में और पैर नैऋत्य (दक्षिण पश्चिम) दिशा में है। शेष शरीर पूरे भूभाग में फैला हुआ है। जिसे मध्य में ब्रह्मा विराजमान है। 'वास्तु पुरुष' का स्वरुप एवं आकार छोटे-बडे विभिन्न भूखंड के आकार के अनुसार हो जाता है। 'समरांगण' में कहा गया है कि वास्तु पुरुष की कल्पना में कला और दर्शन दोनों छिपे हुए हैं। कला की दृष्टी से वास्तु पद विन्यास भवन का नक्शा है। दर्शन की दृष्टी से यह भवन की रक्षा है और भवन निवासियों के कल्याण के लिए एक जीवन दर्शन है। जहां तक दिशा का सवाल है चारों मुख्य दिशाओं के अलावा चारों कोनों मे चार दिशा कोण है। इस तरह वास्तु प्रयोजन में आठ दिशाएं हो जाती है। शुभ अशुभ फल में दिशा निर्धारण सर्वोपरि है।

संजय माहेश्वरी

**मुंबई में ऐसी कौन सी इमारतें है जो वास्तु शास्त्र के हिसाब से परिपूर्ण है?**

मुंबई ऊंची इमारतों का शहर है। यहां की भौगोलिक स्थिति में चुंबकिय प्रवाह ठीक है इसीलिए शहर का दक्षिणी भाग ज्यादा उन्नत है। दिल्ली में भी ऐसी ही स्थिती है। यहां कई सारी इमारतें वास्तु में खरी है। मगर वहां के निवासी या कर्मचारी किस दिशा या कोण में अपना आसन जमाए है, इसका प्रभाव भी वास्तु के परिपूर्ण होने या न होने पर पडता है।

• राकेश अग्रवाल

# वास्तु चेतना, मानवीय सेवा का अहम अंग : संजय माहेश्वरी

मुंबई के वास्तु सलाहकार २७ वर्षीय संजय माहेश्वरी ने वास्तुशास्त्र के गहन अध्ययन के साथ विद्वानों की संगत में अनेक प्रयोगात्मक विश्लेषण किए हैं। अपने अनुभवों के आधार पर वे मानते हैं कि सुखद जीवन के लिए यह एक जनजागरण का विषय है । वास्तु अनुशासन में रहकर कोई भी व्यक्ति इसका लाभ उठा सकता है। इसलिए वास्तु चेतना प्रसार में शरीक होना उन्हें मानवीय सेवा का एक महत्वपूर्ण अंग लगता है। कुछ प्रश्नों के उत्तरों के माध्यम से उन्होंने वास्तुशास्त्र पर विस्तृत चर्चा की।

संजय : दिशाएं बदलेंगी दशा

**वास्तु शिल्पकला का उद्‌भव कहां से हुआ ?**

वास्तु शिल्पकला भारत की प्राचीनतम संस्कृती है, जिसके अधिष्ठाता 'वास्तु पुरुष' है और 'विश्वकर्मा' प्रथम गुरू । रामायण में वर्णित ऊंचे भवन, महाभारतकालीन मायासभा तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण की द्वारिका आदि के निर्माण में भी वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों के समावेश का उल्लेख है। चीन, जपान जैसे अनेक देशों से शताब्दियों पहले भी हमारे सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संबंध रहे थे । इसलिए उन देशों को भी वास्तु हमारी देन है, जो जो विभिन्न नामों से वहां प्रचलित है । हमारे देश में समरांगण सूत्रधार, विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र, शिल्प रत्नाकर बृहद् संहिता, मय शिल्पम्, मायामता क्षीरार्णव, मंडनसूत्रधार एवं राजवल्लभ जैसे कई मौलिक ग्रंथ उपलब्ध है, जो वास्तुशास्त्र की परिपूर्ण व्याख्या करते है।

हावर्ड युनिवर्सिटी ने भी करीब ६०-७० साल पहले वास्तु शास्त्र पर कई संस्करण प्रकाशित किए है। हमारे देश से ही वास्तु के मूल सिध्दांतो का विदेशों में प्रसार हुआ है तथा विभिन्न नामों से वास्तु विज्ञान ने वहां अपनी सार्थकता साबित की है, किन्तु मध्यकालीन युग से हम इसे भुला बैठे है । अब हम इसे पुनः व्यवहार में ला रहे है ।

**वास्तु शिल्प की उत्पत्ति का समय क्या था ?**

वास्तु शिल्प शास्त्र का प्रादुर्भाव वेदों की उत्पत्ति की साथ ही हुआ है । वेद भारतीय संस्कृति की मूल, मौलिक एवं प्रामाणिक ग्रंथ हैं । अथर्ववेद में आगे चलकर ' स्थापत्य वेद ' विषय पर जो विस्तृत चर्चा है, उसे ही वास्तु शास्त्र का शिला लेख कहा गया है । संपूर्ण सृष्टि का निर्माण ' पंचभुत ' से हुआ है । पंचभुत का अर्थ है आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा भूमि । इस तरह हम देखते है कि अर्वाचीन, मध्य एवं वर्तमान काल में भवन , प्रासाद, मंदिर या कुटियें आदि का जो भी निर्माण हुआ है। यह सब मूलतः पंचभूत का ही अंग है और पंचभूत का अस्तित्व वैज्ञानिक है, काल्पनिक नही पंचभूत के पांच सोपानों में से एक आधार भूमि अर्थात् पृथ्वी है । पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण एवं चुम्बकीय सिध्दांत का समन्वय सुर्य दिशाओं एवं वायु प्रवाह आदि से किया गया है, जो येन-केन प्रकारेण विज्ञान सम्मत है। इस तथ्य से इन्कार नही किया जा सकता कि वास्तु शिल्प का आधार ही वैज्ञानिक है । संस्कृत शब्द वास्तु का अर्थ है वास करने का स्थान । ऐसा कोई स्थान जहां मानव अपने जीवन के विभिन्न वांछित कर्मों की परिणति की आकांक्षा रखता हो । वास्तुशिल्प का दायरा काफी विस्तृत है।

आज संपूर्ण जनमानस में व्याप्त घोर अशांति , असंतोष, चिंता, तनाव, दुःख, दरिद्रता और आपसी वैमनस्य के मूल में व्याप्त कुछ कारणों में से, वास्तुशास्त्र के सिध्दांतो को न अपनाना ही मुख्य है । वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों को अब और अनदेखा नही किया जाना चाहिए, क्योंकि जिन घरों, दफ्तरों तथा कल कारखानों आदि में हम रात-दिन बैठते है, उनका निर्माण वास्तु के आधार पर सुख शांति नींव पर होना चाहिए । धुआंधार अवांछित निर्माण कार्य हो रहा है, सभी भवन निर्माण में लगे है, पर निर्माण के क्या - क्या आधार होना चाहिए, इस पर बहुत ही कम लोग ध्यान देते है ।

**निर्माण के आधार से क्या तात्पर्य है ?**

यह सुनिश्चित है की आप चुम्बकिय आधार व दिशाओं के सहि तालमेल पर चलेंगे, तो जहां पर आपको मानसिक शांति मिलेगी, वहीं आपकी चतुर्मुख श्री वृद्धी होगी । आवश्यक है की किसी योग्य वास्तु शिल्प सलाहकार से अपने लिए वांछित भूखण्ड एवं निर्माण संबंधी परामर्श ले ।

प्राणीमात्र का जीवन उसके जन्म समय पर विद्यमान गृह नक्षत्रों की स्थितियों से निर्धारित हो जाता है अतः निर्माण कार्य में अपने जन्म लग्न से बताए गए समय पर श्री गणेश करने का सही निर्देश लेना श्रेयस्कर है।

**वास्तु के सिध्दांत किसने बनाए ?**

वास्तुशास्त्र के मूल सिध्दांतो की कुछ झलक हमारे ऋग्वेद में भी मिलती है । महाकाव्यों, ब्राह्मण-ग्रंथ, कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र नारद संहिता एवं पुराणों में इसका उल्लेख है । वराहमिहिर के ज्योतिष ग्रंथ 'बृहद् संहिता' में वास्तु शास्त्र के नियमों की पूर्ण व्याख्या है। महाराजा भोजदेव ने लगभग ग्यारहवीं शताब्दि में 'समरांगण सुत्रधार' लिखा जो वास्तुशास्त्र का एक प्रामाणिक एवं अधिकृत ग्रंथ माना जाता है । इसके बाद मेवाड के महाराणा कुंभ के राज्यकाल में श्री मण्डन सुत्रधार ने भी वास्तु संबंधित बहुमूल्य साहित्य की रचना की । इन्ही की प्रेरणा से करीब सौ वर्ष पूर्व गुजराती भाषा में 'राजवल्लभ' नामक ग्रंथ की रचना हुई, जो वास्तुशास्त्र का एक अनुपम शिलालेख है

**क्या वास्तुशास्त्र के नियमोंका परिपालन हरकिसी के लिए संभव है ?**

आज के अत्यन्त व्यस्त महानगरीय जीवन में जहां सामान्य आदमी अपने आवास के लिए धन व स्थान न जुटा सकता हो, वहां वह किस प्रकार वास्तु निर्धारित नियमों का पालन करेगा ? अधिकांश भवन निर्माता महज धनोपार्जन के लिए व्यावसायिक आधार पर ही भवन निर्माण करते है तो कैसे वास्तु नियमों का ध्यान रखेंगे ? 'जिन्ह खोजा तिन्ह पाइयो गहरे पानी पैठ' विवेकशील वास्तु सलाहकारों ने शास्त्रां द्वारा निर्धारित नियमों के अंतर्गत विभिन्न विवेचनाओं से इस समास्या का समाधान निकाला है । मै यह तो नही कहता कि वास्तु ही एकमात्र भाग्यविधाता है, परन्तु यह कहने में निःसंदेह कोई संकोच नही है कि वास्तु निर्धारित नियमों को अपनाने से जीवन में सुख, शांति व समृध्दि का प्रादुर्भाव अवश्यम्भावी है, जो जीव को नई आशा , उमंग व उत्साह से ओतप्रोत कर देगा । यह सुनिश्चित है कि आप चुम्बकिय आधार व दिशाओं के सही तालमेल पर चलेंगे, तो चतुर्मुख श्री वृध्दि होगी ।

प्राणीमात्र का जीवन उसके जन्म समय पर विद्यमान गृह-नक्षत्रों की स्थितीयों से निर्धारीत हो जाता है अतः निर्माण कार्य में अपने जन्म लग्न से बताए गए समय पर श्री गणेश करने का सही निर्देश लेना श्रेयस्कर है । वास्तु सलाहकारों, वास्तु विशेषज्ञों को अपने व्यापक अनुभवों के आधार पर ही अपने याचकों को समुचित मार्गदर्शन देना होगा। मुम्बई जैसे महानगरों में जहां आबादी एवं आवासीय भवन दोनों ही सुरसा के मुख की तरह बढ रहे हों, वहां भूखण्ड तो क्या,अपने सीमित साधनों में साधारण फ्लेट खरीद पाना भी मुश्किल है, वहां वास्तुकार अपने याचकों को कैसा परामर्श देंगे? यह सब उसे वास्तु सिद्धांतों की परिधि में रहते हुए व्यावहारिक ज्ञान व पहलू से निर्धारित करना पडेगा । वास्तु निर्माण के प्रभाव से दिशाएं ठीक हों, तो दशा स्वतः सुधर जाएगी ।

मुलाकात : साधना देवेश

मुलाकात

# सर्वांगीण विकास के लिए वास्तु अनुशासन जरुरी

प्राकृतिक तकनीकी से लोगों को जोडकर रखना यह वास्तु का पहला गुणसूत्र है। जिसका सभी प्राणी अपने भौतिकी क्रियाओं के बीच निरंतर उपयोगिता महसूस करते है। क्योंकि वास्तुशास्त्र कोई अंध विश्वास नही है न ही यह कोई जादू टोना है। तेजी से बदलते समय चक्र में वास्तव का महत्व पुनः बढने लगा है। मूलतः वास्तु एक संस्कृत शब्द है। जिसका अर्थ है, वास करने का स्थान इस विद्या से जुडे कुछ सवालों को समझने के लिए निर्भय पथिक के मुख्य संवाददाता ने वास्तु सलाहकार तैंतीस वर्षीय संजय मालू से बात की। प्रस्तुत है संजय मालू से हुई बातचीत के प्रमुख अंश:

**वास्तु शास्त्र शिल्पकार का उद्भव कहां से और कैसे हुआ ?**

वास्तु शिल्पकला भारत की प्राचीनतम संस्कृति है, जिसके अधिष्ठाता, वास्तु पुरुष है, और विश्वकर्मा प्रथम गुरु। रामायण, महाभारत और योगेश्वर श्रीकृष्ण की द्वारिका आदि के समय काल मे वर्णित ऊंचे भवन, मायासभा आदि के निर्माण में भी वास्तुशास्त्र के सिध्दांतों का उल्लेख है। चीन - जपान जैसे अनेक देशों ने शताब्दियों से हमारे सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संबंध रहे है। इसलिए इन देशों की भी वास्तु हमारी ही देन है, जो विभिन्न नामो से वहां प्रचलित है। हमारे देश में समरांगण सूत्रधार, विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र, शिल्प रत्नाकर बृहदसंहिता, मय शिल्पम, मायामाता, क्षीरार्णव, मंडनसूत्रधार एवं राजवल्लभ जैसे कई मौलिक ग्रंथ उपलब्ध है, जो वास्तु शास्त्र की परिपूर्ण व्याख्या करते है, वास्तुशिल्प शास्त्र का प्रादूर्भाव वेदों की उत्पति के साथ ही हुआ।

**वास्तु पुरुष क्या होता है और दिशाओं का वास्तुशास्त्र में क्या महत्व है ?**

भगवान शंकर ने जिस समय अंधकासुर का वध किया, उस समय उनके ललाट से पृथ्वी पर पसीने की बूंदे गिरी, उनसे एक विकराल मुखवाला प्राणी उत्पन्न हुआ। उस प्राणी ने पृथ्वी पर गिरे हुए अंधकों के रक्त का पान कर लिया। फिर भी जब वह तृप्त नही हुआ, तब वह भगवान शंकर के सम्मुख घोर तपस्या करने लगा। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उससे वर मांगने को कहा। उसने वर मांगा कि



यह है वास्तु पुरुष

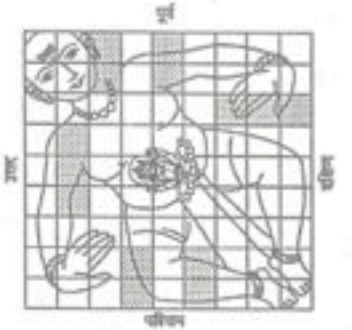

मैं तीनों लोकों को ग्रसने में समर्थ होना चाहता हूं। वर प्राप्त करने के बाद वह अपने विशाल शरीर से तीनो लोकों को अवरुध्द करता हुआ पृथ्वी पर आ गिरा। तब भयभीत देवताओं नें उसको अधोमुख करके वहीं स्तंभित कर दिया। जिस देवता ने उसको जहां दबा रखा था, वह देवता उसके उसी अंग पर निवास करने लगा। सभी देवताओं के निवास करने के कारण वह वास्तु पुरुष के नाम से प्रसिध्द हुआ। भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजित, शिव, इंद्र, ब्रह्मा, कुमार, नंदिश्वर, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरुध्द, शुक्र तथा बृहस्पति में अठारह वास्तुशास्त्र के उपदेष्टा माने गए है।

वास्तु पुरुष एक ऐसा पुरुष है जो संपूर्ण पृथ्वी पर सोया हुआ है। उसका सिर ईशान्य (उत्तर पूर्व) दिशा में और पैर नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में है। शेष शरीर पूरे भू-भाग में फैला हुआ है। जिसके मध्य में ब्रह्म विराजमान है। वास्तु पुरुष का स्वरुप एवं आकार छोटे-बडे विभिन्न भूखंड के आकार के अनुसार हो जाता है। समरांगण में कहा गया है कि वास्तु पुरुष की कल्पना में कला और दर्शन दोनों छिपे हुए है। कला की दृष्टि से वास्तु पद विन्यास भवन का नक्शा है। दर्शन की दृष्टि से यह भवन की रक्षा है और भवन निवासियों के कल्याण के लिए एक जीवन दर्शन है।

जहां तक दिशा का सवाल है चारों मुख्य दिशाओं के अलावा चारों कोणों मे चार कोण है। इस तरह वास्तु प्रयोजन में आठ दिशाएं हो जाती है। शुभ-




(दिशाएं बदलेंगी दशा)

अशुभ फल में दिशा निर्धारण सर्वोपरि है। जिस प्रकार से प्राणिमात्र का जीवन उसके जन्म समय पर विद्यमान गृह-नक्षत्रों की स्थितियों से निर्धारित हो जाता है। उसी प्रकार से किसी निर्माण कार्य में अपने जन्म लग्न से बताए गए समय पर श्री गणेश करने का सही निर्देश लेना जरुरी होता है। यह सब वास्तुकार वास्तु सिध्दांतों की परिधि में रहते हुए व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध कराते है। वास्तु निर्माण के प्रभाव से दिशाएं ठीक हों, तो दशा स्वतः सुधर जाती है।

**वास्तु शास्त्र का प्रचलन पिछले डेढ दशक से जिस तरह बढा है, क्या उससे यह नहीं लगता की एक खास वर्ग के लिए इसने फैशन का रुप ले लिया है?**

नही यह फैशन कतई नही है। यह चेतनाबोध है। प्राकृतिक तकनीकिसे लोगों का जुडना आधुनिकता या दिखावा नही है। यह बात जरुर है की पिछले डेढ-दो दशकों से वास्तु के अनुरुप या वास्तु प्रशंसकों की संख्या बढी है और लगातार बढ रही है। जिन लोगों ने वास्तु सिद्धांतो को जीवन में अपनाया है, उसका सुखद प्रभाव देखा है। इससे इसका प्रसार तो स्वाभाविक रुप से बढना ही है, और वास्तु के लिए केवल पैसा ही नहीं खर्च करना पडता, उसके अनुशासन में भी रहना पडता है।

**वास्तु के हिसाब से एक अच्छा घर किसी तरह का होना चाहिए ?**

जब अच्छे घर की बात आती है तो उसका तात्पर्य उस घर से है जिसके निर्माण में न किसी प्रकार का समझौता हो, और न ही कोई किंतु परंतु। ऐसा घर जो वास्तु सिद्धांतों से परिपूर्ण है, एक आदर्श घर कहा जा सकता है। उसके लिए भूखंड उत्तरी पूर्वी मार्ग के कोने में स्थित होना चाहिए या जिसके चारों ओर मार्गहो या फिर पूर्व या उत्तर दिशा के मार्ग पर स्थित हो, मगर मार्ग के आखिर में न हो। भूखंड चौरस या वर्गाकार हो, मगर लंबाई चौडाई की दुगनी से कम हो। फिर वास्तु सलाहकार के परामर्श से मकान का नक्शा तैयार करना चाहिए, वास्तु विशेषज्ञ ही बताएंगे की शयन कक्ष कहां हो, और उसका दरवाजा किस तरफ खुलना चाहिए, अतिथि कक्ष कहां हो, रसोई कहां हो आदि। इस तरह का मकान तुलनात्मक दृष्टी से ज्यादा खुला होगा। मकान का दक्षिणी व पश्चिमी भाग ऊंचाई पर होना चाहिए। यह ऊंचाई पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति तथा विद्युत प्रवाह को अबाध गति से बहने देने की प्रक्रिया है।

**मुंबई में जहां अधिकांश लोग जैसे - तैसे एक छत की व्यवस्था कर पाते है, उनके जीवन में वास्तु शास्त्र की क्या उपयोगिता रह जाती है ?**

मुंबई का जीवन हमारे देश के अन्य महानगरों से भिन्न नही है। यह सही है कि यहां साधारण आदमी के लिए छत की जुगाड महत्वपूर्ण उपलब्धि है। किंतु वास्तु शास्त्र की उपयोगिता का लाभ वास्तु अनुशासन में रहकर लिया जा सकता है, जैसे दिनचर्या के आवश्यक दिशा निर्देश का पालन करे तो जीवन में तनाव भी कम हो जाते हैं। १. पूजा हमेशा पूर्व या उत्तर में मुंह करके करनी चाहिए, हो सके तो छः से आठ के बीच करें. २. पूजा नीचे जमीन पर कला आसन रखकर ही करनी चाहिए, सुबह शाम दो दीपक-एक घी और एक तेल की होनी चाहिए। ३. पूजा घर मे मूर्तियां एक, तीन, पांच, सात, नौ, ग्यारह इंच तक ही होनी चाहिए। इससे बडी नही, खडे हुए गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती घर मे नही होने चाहिए। ४. हमेशा पूर्व या दक्षिण में सिर रखकर सोना चाहिए, स्त्री को पुरुष के उलटे हाथ की तरफ सोना चाहिए। ५. पढाई करने वालों का मुंह पूर्व की तरफ हों और पढने वालों का मुंह उत्तर की तरफ होना चाहिए। ६. बैठना, देखना, नहाना, खाना, टेलीफोन आदि में हमेशा मुंह उत्तर या पूर्व की तरफ ही रखना चाहिए। ७. खाना बनाते समय मुंह केवल पूर्व दिशा की तरफ ही होना चाहिए। ८. मुख्य व्दार पर ऊपर की दिवार पर घी और सिंदूर मिलाकर स्वच्छ एंव साफ स्वस्तिक बनाना चाहिए. ९. सुबह पलंग से उठते वक्त दायां और घर से बाहर निकलते वक्त बाया पैर रखना चाहिए। १०. घर के अंदर कांटेवाले, दुधवाले, फलवाले पेड-पौधे नही लगाना चाहिए, तुलसी का पवित्र पौधा पूजा स्थान के आसपास होना चाहिए। ११. घर में महाभारत या लडाई के चित्र, रोते हुए चित्र या पशु-पक्षियों के चित्र तथा मूर्तियां नही रखना चाहिए। १२. आवश्यक न हो तो शाम के समय नही सोना चाहिए। रात को सोते समय अपने कुलदेव का ध्यान जरुर करना चाहिए। और १३. सुबह का स्नान ग्यारह बजे के पहले-पहले कर लेना चाहिए। उपरोक्त सभी कार्य बताए गए दिशा-निर्देश पर करें तो फल उत्तम होगा। जानकारी के लिए श्री मालू से ई - मेल पर vcvastu@vsnl.net या वेब साइट vastushilp.com पर संपर्क किया जा सकता है।

# सुखद जीवन के लिए वास्तुशास्त्र एक जनजागरण का विषय

प्राकृतिक तकनीकी से लोगो को जोडकर रखना यह वास्तु का पहला गुणसूत्र है। जिसका सभी प्राणी अपने भौतिकि क्रियाओं के बीच निरंतर उपयोगिता महसुस करते है। क्योंकि



संजय मालू

वास्तुशास्त्र कोई अंधविश्वास नही है, न ही यह कोई जादू-टोना है। तेजी से बदलते समय चक्र मे वास्तु का महत्व पुनः बढने लगा है। मूलतः वास्तु एक संस्कृत शब्द है। जिसका अर्थ है वास करने का स्थान। इस विधा से जुडे कुछ सवालों को समझने के लिए जनसंसार प्रतिनिधि ने वास्तु सलाहकार तैंतीस वर्षीय संजय मालू से बात की।

श्री मालू के मुताबिक सुखद जीवन के लिए यह एक जनजागरण का विषय है। वास्तु अनुशासन में रहकर कोई भी इसका लाभ उठा सकता है। इसलिए वास्तु चेतना प्रसार मे शामिल होना, उन्हे मानवीय सेवा का एक महत्वपूर्ण अंग लगता है। श्री मालू वास्तु के साथ-साथ स्थापत्य विज्ञान में भी योग्यता रखते हुए भवन के ढांचे और मानवीय मूल्यों पर पडने वाले वास्तु के प्रभाव पर गहन अध्ययन किया है। यहां प्रस्तुत है संजय मालू से हुई बातचीत के प्रमुख अंश :-

**वास्तु शास्त्र शिल्पकला का उदभव कहां से और कैसे हुआ ?**

वास्तु शिल्पकला भारत की प्राचीनतम संस्कृति है, जिसके अधिष्ठाता 'वास्तु पुरुष' हैं और 'विश्वकर्मा' प्रथम गुरुमाना, महाभारत और योगेश्वर श्रीकृष्ण की द्वारिका आदि के समय काल में वर्णित ऊंचे भवन, मायासभा आदि के निर्माण में भी वास्तु शास्त्र के सिध्दांतों का उल्लेख है। चीन जापान जैसे अनेक देशों से शताब्दियों से हमारे सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संबंध रहे है। इसलिए इन देशों को भी वास्तु हमारी ही देन है, जो विभिन्न नामों से वहां प्रचलित है। हमारे देशने समरांगन सूत्रधार, विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र, शिल्परत्नकार, बृहदसंहिता, मय शिल्पम, मायामाला, क्षीरार्णव, मंडनसूत्रधार एवं राजवल्लभ जैसे कई मौलिक ग्रंथ उपलब्ध है जो वास्तु शास्त्र की परिपूर्ण व्याख्या करते है।

वास्तु शिल्पशास्त्र का प्रादुर्भाव वेदों की उत्पत्ति के साथ ही हुआ। वेद भारतीय संस्कृति के मुल, मौलिक एवं प्रामाणिक ग्रंथ है। अथर्वेद मे स्थापत्य वेद विषय पर जो विस्तार में वर्णित किया गया है उसे ही वास्तुशास्त्र का शिलालेख कहा गया है। संपूर्ण सृष्टि का निर्माण 'पंचभूत' से हुआ है। पंचभुत का अर्थ है आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा भुमि।

इस तरह हम पाते है कि अर्वाचिन, मध्य एवं वर्तमान काल में भवन, प्रासाद, मंदिर या कुटियों आदि का जो भी निर्माण हुआ है, वह सब मूलतः पंचभूत का ही अंग है और पंचभूत का अस्तित्व वैज्ञानिक है, काल्पनिक नही। पंचभूत के पांचो सोपान में से एकआधार भूमि अर्थात पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण एवं चुंबकिय सिध्दांत का समन्वय सूर्य की दिशाओं एवं वायु प्रवाह आदि से किया गया है, जो यह सिध्द करता है कि वास्तु शिल्प का आधार पूर्णतः वैज्ञानिक है।

**वास्तु पुरुष क्या होता है और दिशाओं का वास्तु शास्त्र में क्या महत्व है ?**

भगवान शंकर ने जिस समय अंधकासुर का वध किया, उस समय उनके ललाट से पृथ्वी पर पसीने की बूंदे गिरी। उनके एक विकराल मुखवाला प्राणी उत्पन्न हुआ। उस प्राणी ने पृथ्वी पर गिरे हुए अंधकों के रक्त का पान कर लिया। फिर भी जब वह तृप्त नही हुआ, तब वह भगवान शंकर के सम्मुख घोर तपस्या करने लगा। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उससे वर मांगने को कहा। उसने वर मांगा कि मैं तीनों लोको को ग्रसने में समर्थ होना चाहता हूं। वर प्राप्त करने के बाद वह अपने विशाल शरिर से तीनों लोकों को अवरुध्द करता हुआ पृथ्वी पर आ गिरा। तब भयभीत देवताओं ने उसको अधोमुख करके वहीं स्तंभित कर दिया। जिस देवता ने उसको जहां दबा रखा था, वह देवता उसके उसी अंग पर निवास करने लगा। सभी देवताओं के निवास करने के कारण वह 'वास्तु पुरुष' के नाम से प्रसिध्द हुआ : भृगु, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नगजित, शिव, इंद्र, ब्रह्मा, कुमार, नंदीश, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरुध्द, शुक्र तथा बृहस्पति- ये अठारह वास्तुशास्त्र के उपदेष्टा माने गए है।

'वास्तु पुरुष' एक ऐसा पुरुष है जो संपुर्ण पृथ्वी पर सोया हुआ है। उसका सिर ईशान्य (उत्तर-पूर्व) दिशा में और पैर नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) दिशा मे है। शेष शरिर पुरे भू-भाग मे फैला हुआ है। जिसके मध्य में ब्रह्मा विराजमान है। वास्तु पुरुष का स्वरुप एवं आकार छोटे-बडे विभिन्न भु-खंड के आकार के अनुसार हो जाता है। 'समरांगण' में कहा गया है कि वास्तु पुरुष की कल्पना में कला और दर्शन दोनो छिपे हुए है। कला कि दृष्टी से वास्तु पद विन्यास भवन का नक्शा है। दर्शन कि दृष्टी से यह भवन की रक्षा है और भवन निवासियों के कल्याण के लिए एक जीवन दर्शन है।

जहां तक दिशा का सवाल है चारो मुख्य दिशाओं के अलावा चारों कोणों में चार कोन है। इस तरह वस्तु प्रयोजन में आठ दिशाएं हो जाती है। शुभ-अशुभ फल मे दिशा निर्धारण सर्वोपरि है। जिस प्रकार से प्राणी मात्र का जीवन उसके जन्मसमय पर विद्यमान ग्रह-नक्षत्रों की स्थितियों से निर्धारित हो जाता है। उसी प्रकार से किसी निर्माण कार्य में अपने जन्म लग्न से बताए गए समय पर श्रीगणेश करने का सही निर्देश लेना जरुरी होता है। यह सब वास्तुकार वास्तु सिध्दांतो की परिधि मे रहते हुए व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध कराते है। वास्तु निर्माण के प्रभाव से दिशाएं ठीक हों तो दशा स्वतः सुधर जाती है।

( दिशाएं बदलेंगी दशा )

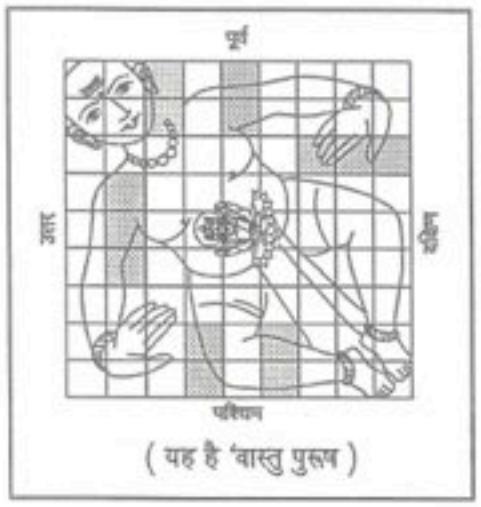

**वास्तु शास्त्र का प्रचलन पिछले डेढ दशक से जिस तरह बढा है, क्या उससेयह नही लगता कि एक खास वर्ग के लिए इसने फैशन का रुप ले लिया है?**

नही, यह फैशन कतई नही है। यह चेतना बोध है। प्राकृतिक तकनीकी से लोगो का जुडना आधुनिकता या दिखावा नही है। यह बात जरुर है कि पिछले डेढ-दो दशकों से वास्तु के अनुरुप या वास्तु प्रशंसकों की संख्या बढ़ रही है। जिन लोगों ने वास्तु सिद्धांतो को जीवन में अपनाया है, उसका सुखद प्रभाव देखा है। इससे इसका प्रसार तो स्वाभाविक रुप से बढना ही है और वास्तु के लिए केवल पैसा ही नही खर्च करना पडता, उसके अनुशासन में भी रहना पडता है।

**वास्तु के हिसाब से एक अच्छा घर किस तरह का होना चाहिए ?**

जब अच्छे घर की बात आती है तो उसका तात्पर्य उस घर से है जिसके निर्माण में न किसी प्रकार का समझौता हो और न ही कोई किन्तु परंतु। ऐसा घर जो वास्तु सिध्दांतो से परिपुर्ण है, एक आदर्शघर कहा जा सकता है। उसके लिए भू-खंड उत्तरी पूर्वी मार्ग के कोने में स्थित होना चाहिए। या जिसके चारो और मार्ग हो या फिर पूर्व या उत्तर दिशा के मार्ग पर स्थित हो, मार्ग के आखिर में न हो। भूखंड चौरस या वर्गाकार हो, मगर लंबाई-चौडाई की दुगुनी से कम हो। फिर वास्तु सलाहकार के परामर्श से मकान का नक्शा करना तैयार चाहिए। वास्तु विशेषज्ञ ही बताएंगे कि शयन कक्ष कहां हो, और उसका दरवाजा किस तरफ खुलना चाहिए। अतिथि कक्ष कहां हो, रसोई कहां हो आदि। इस तरह का मकान तुलनात्मक दृष्टी से ज्यादा सुखा होगा। मकान का दक्षिणी व पश्चिमी भाग ऊंचाई पर होना चाहिए। यह ऊंचाई पृथ्वी की चुंबकिय शक्ति तथा विद्युत प्रवाह को अबाध गति से बहने देने की प्रक्रिया है।




( यह है 'वास्तु पुरुष )

**वास्तु शास्त्र के सिध्दांत घर बनाने तक ही सीमित है या कारखानों और वाणिज्य इमारतों से भी इसकी जरुरत होती है ?**

ऐसा कोई भी स्थान जहां मनुष्य अपने जीवन के मनोवांछित कार्यों की कर्मभूमि बनाना चाहता हो, वहां वास्तु का पालन हो सकता है। चाहे वह उद्योग-धंदा हो, फैक्टरी हो, व्यापारिक प्रतिष्ठान हो, कलाकेंद्र हो, अस्पताल हो, होटल हो या फिर देवालय ये सभी वास्तु परिधि में आते है।

**अंत में मुंबई में, जहां अधिकांश लोग जैसे-तैसे एक छत की जुगाड कर पाते है, उनके जीवन में वास्तु शास्त्र की क्या उपयोगिता रह जाती है ?**

मुंबई का जीवन हमारे देश मे अन्य महानगरो से भिन्न नही है। यह सही है कि यहां साधारण आदमी के लिए छत की जुगाड महत्वपूर्ण उपलब्धि है। किंतु वास्तु शास्त्र की उपयोगिता का लाभ वास्तु अनुशासन में रहकर लिया जा सकता है। जैसे दिनचर्या के आवश्यक दिशा-निर्देश का पालन करें तो जीवन मे तनाव भी कम हो जाते है।

१) पुजा हमेशा पूर्व या उत्तर मे मुंह करके करनी चाहिए, हो सके तो छह से आठ के बीच करे। २) पूजा नीचे जमीन पर काला आसन रखकर ही करनी चाहिए। सुबह-शाम दे दीपक - एक घी और एक तेल की होनी चाहिए। ३) पुजा घर में मूर्तियां एक, तीन, पांच, सात, नौ, ग्यारह इंच तक की होनी चाहिए इससे बडी नही। खडे हुए गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती घर मे नही होने चाहिए। ४) हमेशा पूर्व या दक्षिण में सिर रखकर सोना चाहिए। स्त्री को पुरुष के उलटे हाथकी तरफ सोना चाहिए। ५) पढाई करने वालों का मुंह पूर्व की तरफ हो और पढाने वालों का मुंह उत्तर की तरफ होना चाहिए। ६) बैठना, देखना, पढना, खाना, टेलिफोन आदि में हमेशा मुंह उत्तर या पूर्व की तरफ ही रखना चाहिए। ७) खाना बनाते समय मुंह केवल पूर्व दिशा की तरफ ही होना चाहिए। ८) मुख्य द्वार पर ऊपर की दीवार पर घी, सिंदुर मिलाकर स्वच्छ एवं साफ स्वस्तिक बनाना चाहिए। ९) सुबह पलंग से उठते वक्त दायां और घर से बाहर निकलते वक्त बायां पैर रखना चाहिए। १०) घर के अंदर कटिंवाले, दुधवाले, फूलवाले पेड-पौधे नही लगाने चाहिए। तुलसी का पवित्र पौधा पूजा स्थान के आस-पास होना चाहिए। ११) घर में महाभारत या लडाई के चित्र, रोते हुए चित्र या मूर्तियां, पशु-पक्षियो के चित्र तथा मूर्तियां नही रखनी चाहिए। १२) आवश्यक न हो तो शाम के समय नही सोना चाहिए। रात को सोते समय अपने कुल देव का ध्यान जरुर करना चाहिए और १३) सुबह का स्नान ग्यारह बजे के पहले-पहले कर लेना चाहिए। उपरोक्त सभी कार्य बताए गए दिशा-निर्देश करें तो फल उत्तम होगा।

• रामचंद्र विश्वकर्मा